एकलव्य

एकलव्य व्यातराज हिरण्यधनु के पुत्र थे जो मगध के राजा जरासंध की सेना में सैनिक थे। उस समय मगध और हस्तिनापुर में संबंध मैत्रीपूर्ण नहीं थे। एकलव्य द्रोणाचार्य के गुरुकुल में धनुर्विद्या ग्रहण करना चाहते थे जिन्हें हस्तिनापुर के राजपरिवार द्वारा युवा कौरव और पांडव राजकुमारों को शस्त्र विद्या प्रदान करने के लिए नियुक्त किया गया था। इसलिए एकलव्य द्रोणाचार्य से भेंट करने हेतु उनके पास गए। यद्यपि द्रोणाचार्य युवा एकलव्य की धनुर्विद्या सीखने की हार्दिक इच्छा से प्रभावित हुए परन्तु उन्होंने एकलव्य को वापस लौटा दिया, क्योंकि वे उच्च जाति के नहीं थे।

एकलव्य अत्यधिक दुखी मन से घर लौट गए परन्तु वे अभी भी दृढ़ संकल्प थे। उन्होंने द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाई तथा उन्हें अपने गुरू के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने प्रतिदिन मूर्ति के समक्ष धनुर्विद्या का अभ्यास किया तथा वर्षों के बाद वे उच्च कोटि के धनुर्धर बन गए।

अमावस्या की रात को जब चारों ओर पूर्ण अन्धकार था, एकलव्य ने तीव्र गति से क्रमिक रूप से तीर चलाकर एक भौंकते हुए जंगली कुत्ते के मुंह को बन्द कर दिया जोकि वन में सोए हुए सभी व्यक्तियों की नींद भंग कर रहा था। उसी रात को द्रोणाचार्य और उनके शिष्य शिकार के लिए उसी वन में आए हुए थे तथा इस करतब को देखकर वे आश्चर्यचकित हो गए। वन में खोजते हुए उनकी भेंट एक युवक से हुई जिसने स्वयं को द्रोणाचार्य का शिष्य बताकर अपना परिचय दिया। ऐसी घोषणा पर आश्चर्यचकित होते हुए द्रोणाचार्य ने उनके दावे का खंडन किया। इस पर एकलव्य उन्हें मूर्ति के समक्ष ले गए। द्रोणाचार्य अपनी ही प्रतिमा को देख कर आवर्श्यचकित रह गए।

द्रोणाचार्य ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए एकलव्य से गुरूदक्षिणा के रूप में उनके दाहिने हाथ का अंगूठा मांग लिया। एकलव्य ने अपना अंगूठा अपने गुरू को भेंट कर दिया तथा एक धनुर्धर के रूप में अपनी योग्यता को नष्ट कर लिया। इस प्रकार द्रोणाचार्य ने अर्जुन की सर्वश्रेष्ठता को बनाए रखने की अपनी इच्छा को पूरा किया।

एकलव्य ने अपनी चार अंगुलियों और बाएं हाथ से तीर चलाना सीखा। उन्हें एक बलशाली योद्धा के रूप में स्वीकार किया गया तथा उन्होंने राजा जरासंध के विश्वासपात्र के रूप में कार्य किया।

डाक विभाग एकलव्य पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

पाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराए गए पाठ पर आधारित
डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण	:	अनुज कुमार
विरूपण	:	नीनू गुप्ता

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	:	27 दिसम्बर, 2013
Date of Issue	:	27 December, 2013
मूल्यवर्ग	:	500 पै.
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	3.1 लाख
Stamps Printed	:	0.31 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	:	India Security Press, Nashik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

EKLAVYA

Eklavya was the son of Vyatraj Harinyadhanu, a soldier in the army of Jarasandha, King of Magadha. The relations between Magadha and Hastinapur were not friendly at that time. Eklavya wanted to learn archery in the Gurukul of Dronacharya who was appointed by the royal family of Hastinapur to teach martial arts to the young Kaurava and Pandav princes. Eklavya, therefore, went to meet Dronacharya. Although, Dronacharya was impressed by young Eklavya's sincere desire he turned him away on finding out that Eklavya was not of a high caste.

Eklavya returned home deeply hurt but he was still resolute. He made a statue of Dronacharya and accepted him as his Guru. He practiced in front of the statue every single day and years of discipline nurtured him into an archer of exceptional prowess.

On amavasya night, when there was complete darkness, Eklavya sewed the mouth shut of a wild barking dog which was disturbing everyone's sleep in the forest by firing arrows in rapid succession. That night Dronacharya and his pupils had come for hunting in the same forest and were astounded to see such a feat. On searching the forest, they met a young man who introduced himself as a student of Dronacharya. Surprised at such a declaration Dronacharya refuted his claim. Eklavya then led him to the statue. Dronacharya was surprised to see his own statue.

Dronacharya siezed the opportunity to ask Eklavya for his right thumb as gurudakshina. Eklavya gave away his thumb to his guru and ruined his ability as an archer. Dronacharya thus fulfilled his ambition to protect the superiority of Arjuna.

Eklavya learned to shoot with four fingers and left hand. He has been hailed as a mighty warrior and worked as a confidant of King Jarasanda.

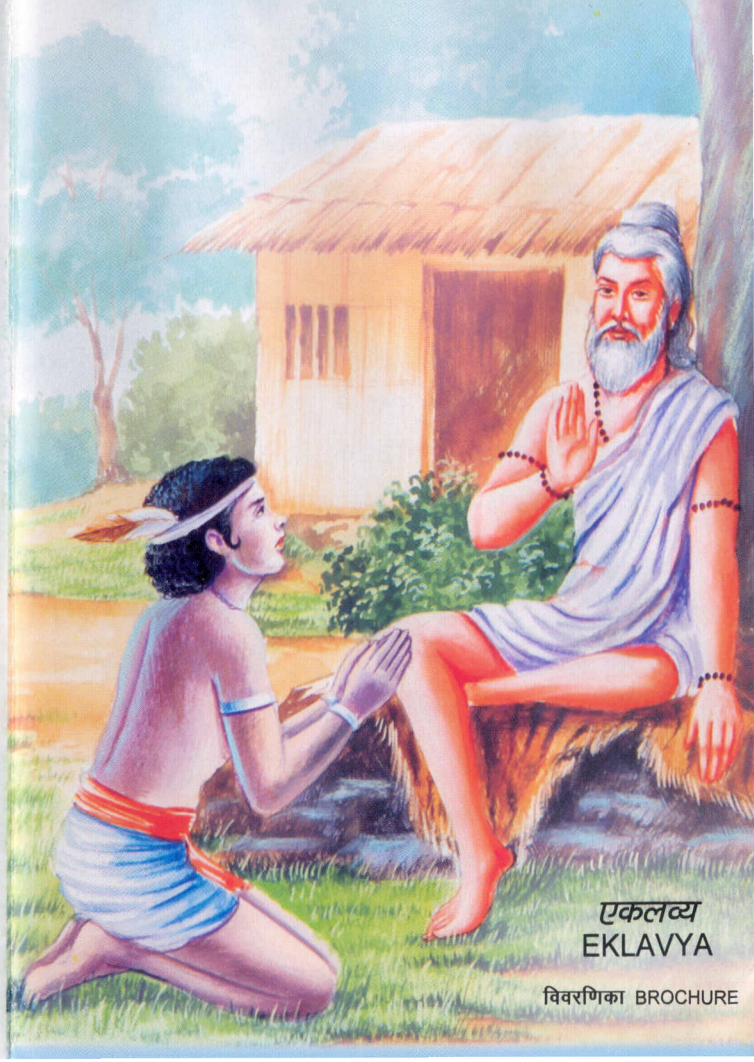
Department of Posts is happy to issue a Commemorative Postage Stamp on Eklavya.

Credits :

Text	:	Based on the text furnished by the proponent
Stamp/FDC	:	Anuj Kumar
Cancellation	:	Nenu Gupta

भारतीय डाक
India Post

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



एकलव्य
EKLAVYA

विवरणिका BROCHURE